" " वृद्धि
" " पुनः परीक्षण
- निरीक्षण, परीक्षण

सामाजिक शोध और सामाजिक सर्वेक्षण

- स्वभाव के साथ ज्ञान
तथ्य का निरीक्षण
- अन्तःसम्बन्ध
- सा. नियन्त्रण

⇒ सा. घटनाओं के सम्बन्ध में सत्य की खोज ही सा. शोध है जिसमें अध्ययन मनमाने ढंग से ना करके निरीक्षण, परीक्षण व प्रयोग पर आधारित वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा किया जाता है। अर्थात वही ज्ञान व बोध वैज्ञानिक होते है जिनमें वैज्ञानिक शोध के दो तत्व सम्मिलित हो:-

निरीक्षण
प्रत्यक्ष रूप से देखकर तथ्यों के विषय में ज्ञान प्राप्त करते है

कारण दर्शाना
इन तथ्यों का अर्थ, सम्बन्ध, वैज्ञानिक ज्ञान से इनका सम्बन्ध निश्चित किया जाता है

= यही दोनो तत्व यदि सा. तथ्यों के सम्बन्ध में किए गए अनुसन्धान में विद्यमान है तो उसे सा. शोध कहते है।

⇒ P.V. Young → सा. शोध एक वैज्ञानिक योजना है जिसका कि उद्देश्य तार्किक तथा क्रमबद्ध पद्धतियों के द्वारा नवीन तथ्यों का अन्वेषण अथवा पुराने तथ्यों की पुनः परीक्षा एवम उनमें पाए जाने वाले अनुक्रमों, अन्तः सम्बन्धों, कारण सहित व्याख्याओं तथा उनको संचालित करने वाले स्वाभाविक नियमों का विश्लेषण करना है।

⇒ मोसर (MOSER) → सा. घटनाओं व समस्याओं के व समस्याओं के सम्बन्ध में नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए किए गए व्यवस्थित अनुसन्धान को हम सा. शोध कहते है।

⇒ बोगार्डस (Bogardus) → एक साथ रहने वाले लोगों के जीवन में क्रियाशील अन्तर्निहित प्रक्रियाओं का अनुसन्धान ही सा. शोध है।

स्पष्ट है कि सा. शोध वह वैज्ञानिक विधि है जिसके द्वारा सा. घटनाओं व समस्याओं के कारणों, अन्तः सम्बन्धों तथा उनमें अन्तर्निहित प्रक्रियाओं का अध्ययन, विश्लेषण व निरूपण किया जाता है। अर्थात सा. शोध सा. जीवन का वैज्ञानिक अनुसन्धान है, जिसमें सा. जीवन के विभिन्न पक्षों के विषय में वैज्ञानिक

अध्ययन किया जाता है। जो तार्किक तथा क्रमबद्ध पद्धतियों पर निर्भर है और इन्हीं पद्धतियों के द्वारा यह सा॰ जीवन व घटनाओं के विषय में अन्वेषण करता है, सा॰ समस्या को सुलझाने या किसी प्राक्कल्पना की परीक्षा करने, पुराने सिद्धान्तों की पुनः परीक्षा करता है तथा विभिन्न सा॰ तथ्यों के बीच पाए जाने वाले अन्तः सम्बन्धों व अनुक्रमों को दर्शाता है।

संक्षेप में सा॰ शोध सा॰ जीवन व ~~सब~~ सम्बन्धों तथा उनमें अन्तर्निहित प्रक्रियाओं व नियमों की एक वैज्ञानिक अनुसन्धान - विधि है।

⇒ <u>उद्देश्य</u> → ① सैद्धान्तिक उद्देश्य

- ज्ञान प्राप्ती
- प्रकार्यात्मक सम्बन्ध
- स्वाभाविक नियम
- वैज्ञानिक अवधारणाओं का निर्माण - P.V. yang

(ii) व्यावहारिक / प्रयोगवादी उद्देश्य

- सा॰ समस्याओं को सुलझाने में सहायक
- सा॰ संगठन बनाये रखने मे मदद (तनाव)
- सा॰ योजनाओं को बनाने में मदद
  - (i) प्रभावपूर्ण / व्यवहारिक ढंग से बनाया गया
  - (ii) क्रियान्वित करने मे ~~जन~~सहयोग किस सीमा तक प्राप्त
- सा॰ नियन्त्रण में सहायक

⇒ सा॰ शोध का अध्ययन क्षेत्र एवं विषय - वस्तु →

सा॰ शोध का अध्ययन - क्षेत्र सम्पूर्ण सा॰ जीवन और उससे सम्बद्ध सा॰ प्रक्रियाओं व नियमों तक विस्तृत है। चाहे वे विशिष्ट हो या सामान्य, नवीन हो या पुराना, आदि।

- सा॰ समस्याओं की प्रकृति व कारण, अन्तः निर्भरता आदि।

⇒ अमेरिकन सोशियोलॉजिकल सोसाइटी ने सा॰ शोध के क्षेत्र के अन्तर्गत निम्नलिखित अध्ययन - विषयों को सम्मिलित करने के पक्ष में राय दी है:—

(i) मानव-प्रकृति तथा व्यक्तित्व का अध्ययन
(ii) जनसमूह तथा सा० समूह का अध्ययन
(iii) परिवार की प्रकृति, अन्तर्निहित नियम, संगठन व विघटन का अध्ययन
(iv) सा० संगठन तथा संस्थाओं का अध्ययन
(v) जनसंख्या तथा प्रादेशिक समूहों का अध्ययन
(vi) ग्रामीण समुदायों का अध्ययन -
(vii) सा० व्यवहारों का अध्ययन - प्रचार, पक्षपात, जनमत, युद्ध, क्रान्ति सा० व्यवहार etc
(viii) समूहों में पाए जाने वाले संघर्ष तथा आवागमन का अध्ययन → धर्म का समाजशास्त्र, शिक्षा का समाजशास्त्र, न्यायालय तथा अधिनियम, सा० परिवर्तन सा० विकास का अध्ययन आता है।
(ix) सा० समस्याओं, सा० व्याधियों, तथा सा० अनुकूलन का अध्ययन → निर्धनता, अपराध, स्वास्थ्य, मानसिक व्याधि आदि।
(x) सिद्धान्त तथा पद्धतियों में नवीन सा० नियमों की खोज, पुराने सिद्धान्त तथा विधियों की पुन: परीक्षा, सा० जीवन में अन्तर्निहित सामान्य नियम व प्रक्रिया तथा नवीन पद्धतियों व प्रविधियों की खोज आदि सम्मिलित हैं।

⇒ सा० शोध के प्रकार → (1) मौलिक या विशुद्ध शोध → इस प्रकार के सा० शोध में सा० जीवन व घटनाओं के सम्बन्ध में मौलिक सिद्धान्तों व नियमों का अनुसंधान किया जाता है और इस अनुसंधान का उद्देश्य नवीन ज्ञान की प्राप्ति व वृद्धि तथा पुराने ज्ञान की पुन: परीक्षा द्वारा उसका शुद्धिकरण होता है।

(2) व्यावहारिक शोध (Applied Research) → व्यावहारिक शोध का काम केवल व्यावहारिक जीवन से सम्बद्ध विषयों तथा समस्याओं के सम्बन्ध में हमें यथार्थ ज्ञान देना है।

(3) क्रियात्मक शोध (Action Research) → जब सा० शोध अध्ययन के निष्कर्षों को क्रियात्मक रूप देने की किसी तात्कालिक अथवा भावी

योजना से सम्बद्ध होता है तो उसे क्रियात्मक शोध कहा जाता है।
अर्थात अनुसंधान के निष्कर्षों का उपयोग विद्यमान सा० अवस्थाओं में परिवर्तन लाने की योजना के एक भाग के रूप में करता है।
- इसमें कुछ विशेष बातो पर ध्यान - (i) अध्ययन के समय घटना या समस्या के वास्तविक क्रिया पक्ष पर ध्यान
(ii) समस्या या घटना के सम्बन्ध में ज्ञान
(iii) सहयोग की प्राप्ति
(iv) रिपोर्ट को आरम्भ में ही अन्तिम रूप न देना।

⇒ <u>वैज्ञानिक शोध के प्रमुख चरण</u> → (B)

(1) विषय का चुनाव → उपलब्ध वैज्ञानिक विधियों की सहायता से अध्ययन सम्भव / व्यवहारिक है या नहीं क्षेत्र - शोध कार्य के दृष्टिकोण से वह व्यावहारिक है या नहीं तथा उसका क्षेत्र सीमित है या नहीं। Young के अनुसार - (i) शोधकर्ता के लक्ष्यों तथा रुचियों (ii) शोध-कार्य के लिए आवश्यक उपलब्ध सामग्री की मात्रा (iii) अध्ययन के विषय में निमित्त सैद्धान्तिक मान्यताओं की जटिलता (iv) अध्ययन - विषय से सम्बद्ध उससे पहले किए गए अन्य शोध-कार्य के आधार पर सीमित किया जा सकता है।

(2) अन्य शोध पुस्तकों का अध्ययन → अन्य शोधकर्ताओं के विचारों, निष्कर्षों तथा पद्धतियों से परिचित कर लें। ऐसा कर लेने पर श्रीमती यंग के अनुसार - (i) अध्ययन - विषय के सम्बन्ध में एक अन्तर्दृष्टि तथा सामान्य ज्ञान प्राप्त करने (ii) शोध-कार्य में उपयोगी सिद्ध होने वाली पद्धतियों के प्रयोग के सम्बन्ध में, (iii) प्राक्कल्पना के निर्माण में (iv) एक ही शोध-कार्य को फिर से दोहराने की गलती से बचने तथा विषय से सम्बद्ध उन पक्षो पर, जिन पर कि दूसरे शोधकर्ताओं ने ध्यान नहीं दिया है, ध्यान देने के विषय में हमें सहायता मिल सकती है।

③ अध्ययन से सम्बद्ध इकाइयों को परिभाषित करना → स्पष्टीकरण
④ प्राक्कल्पना का निर्माण →
⑤ सूचना के स्रोत तथा अध्ययन के लिए उपयोगी पद्धतियों का निर्धारण -
⑥ तथ्यों का निरीक्षण तथा संकलन →
⑦ वर्गीकरण
⑧ निष्कर्षीकरण एवं नियमों का प्रतिपादन →

⇒ पैन्सिलवेनिया विश्व० के प्रोफेसर W. C. Schluter (स्लूटर) ने इन चरणों को और विस्तृत रूप में बतलाई:-

(i) क्षेत्र अथवा विषय का चुनाव
(ii) शोध की समस्या को समझने के लिये क्षेत्र का सर्वेक्षण
(iii) एक पुस्तक-सूची का निर्माण
(iv) समस्या को परिभाषित करना
(v) समस्या के तत्वों का विभाजन तथा रूपरेखा का निर्माण
(vi) समस्या के तत्वों का, आँकड़ों अथवा प्रमाणों के साथ उनके सम्बन्धों के आधार पर वर्गीकरण करना
(vii) समस्या के तत्वों के आधार पर उन आँकड़ो तथा प्रमाणों का निर्धारण जिनकी कि आवश्यकता होगी
(viii) आवश्यक आँकड़ो या प्रमाणो की उपलब्धि का अनुमान लगाना
(ix) समस्या के हल होने की सम्भावना की जाँच
(x) आँकड़ों तथा सूचनाओं का संकलन
(xi) विश्लेषण के लिए आँकड़ों को नियमित व व्यवस्थित करना
(xii) आँकड़ों व प्रमाणों का विश्लेषण व निर्वचन
(xiii) प्रस्तुतीकरण के हेतु आँकड़ों को व्यवस्थित करना
(xiv) विशिष्ट-कथनों, सन्दर्भों तथा पादटिप्पणियों का चुनाव व उपयोग
(xv) शोध-विवरण प्रस्तुत करने के हेतु स्वरूप व शैली को विकसित करना।

⇒ शोध - कार्यक्रम के चुनाव व नियोजन में सावधानियां :—

① शोध - विषय के सम्बन्ध में आरम्भिक ज्ञान
② विषय के चुनाव में सावधानी
③ शोध के क्षेत्र के निर्धारण में सतर्कता
④ शोध की इकाइयों को परिभाषित करने की आवश्यकता
⑤ भावी कठिनाइयों का बोध
⑥ पद्धति का चुनाव
⑦ तथ्यों के स्रोत तक पहुँच के सम्बन्ध में अनुमान
⑧ पूर्व - अध्ययन व पूर्व - परीक्षण
⑨ समय तथा व्यय का अनुमान
⑩ कार्यकर्ताओं का चुनाव तथा प्रशिक्षण
⑪ शोध - प्रशासन
⑫ स्वयं को प्रस्तुत करना

⇒ सा॰ शोध की उपयोगिता / महत्व :—

(i) अज्ञानता का नाश
(ii) समाज - कल्याण में सहायक
(iii) सा॰ प्रगति में सहायक
(iv) सा॰ नियन्त्रण में सहायक
(v) सा॰ विज्ञानों की उन्नति में सहायक
(vi) सैद्धान्तिक उपयोगिता

⇒ सा॰ शोध की विशेषता ?

i) Accuracy & Precision (परिशुद्धता और यथार्थता)

ii) verifiability (सत्यता की खोज

iii) Evidence of Facts (तथ्य को प्रमाणित करना)

iv) objectivity (वस्तुनिष्ठता

v) Reliability & validity (विश्वसनीयता और मान्यता)

x) original works (